[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3598
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंगो का मनोवैज्ञानिक प्रभाव (किशोरियों के संदर्भ में एक अध्ययन)

डॉ. गीताली सेनगुप्ता
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, (गृहविज्ञान)
माखनलाल चतुर्वेदी शासकीय स्नातकोत्तर, कन्या महाविद्यालय,खण्डवा (म.प्र.)

रंगों के प्रति मानव का अनुराग आज से नहीं बल्कि सदियों से रहा है। रंग प्रकृति एवं ईष्वर की सबसे बहुमूल्य देन है। रंग के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। प्रकृति द्वारा रचित अनगिनत वस्तुओं के विविध रंग प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं। इन्हें देखकर मनुष्य ने उसे चित्रकलाओं, मूर्तिकलाओं, नाट्य एवं साहित्य में उकेरा है। रंगों से हमें निरन्तर ऊर्जा एवं चैतन्य शक्ति प्राप्त होती है, निष्चित ही रंगविहीन जीवन नीरस, उदासीन एवं एकसार होता है। मनुष्य स्वभाव से सुन्दरता प्रेमी है। अतः रंगों से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। पहले प्रकृति से फिर धीरे–धीरे वैज्ञानिक अनुभवों से उसने विभिन्न रंगों का सृजन करना सीख लिया है और अपने जीवन को रंगों से सरोवार कर लिया।

मार्डन सेन्चुरी एनसाइक्लोपीडिया के टवस 6 के अनुसार– "रंग प्रकाश का ही एक गुण है, जिन्हें आँखे देखती है और ये विभिन्न आकार की प्रकाष लहरों से बनते हैं।" मनोवैज्ञानिकों ने रंगों का अध्ययन अपने दृष्टिकोण से किया है रंगों का मनुष्य के मनोभावों पर गहरा प्रभाव पड़ता है कुछ गर्म रंग जैसे लाल, पीला व नारंगी जो हमें खुषी, हर्ष, उत्साह एवं चित्त प्रसन्नता को दर्षाते हैं एवं ठंडे रंग जैसे नीला, हरा, बैंगनी खुषहाली, शीतलता, शान्ति और संतोष के प्रतीक व सूचक होते हैं। श्वेत रंग पवित्रता का धोतक तो काला रंग अवसाद दुःख व्यथा, उदासी एवं विद्रोह की भावना से जुड़ा होता है। रंगों का संवेगों पर भी प्रभाव पड़ता है। स्नायु संस्थान से संबंधित रोग अर्थात् मानसिक रोगियों की चिकित्सा के लिए भी रंगों का प्रयोग किया जाता है ठंडे रंग जैसे नीला व हरा ऐसे व्यक्तियों को शांति प्रदान करते हैं।
प्रांग के अनुसार–प्राथमिक रंग तीन होते हैं

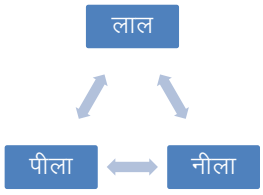

जबकि मनोवैज्ञानिकों के अनुसार प्राथमिक रंग च्तपउंतल ब्वसवनत चार होते हैं

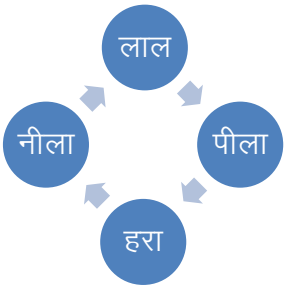

द्वैतीयक रंगें(मबवदकतल ब्वसवनत)– चारो को मिश्रित करने से द्वैतियक रंग बनते है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

इसके अतिरिक्त ये रंग एक दूसरे के पूरक माने जाते हैं। लाल और हरा, पीला, हरा और बैंगनी, पीला और नीला, नांरगी और नीला हरा।

विभिन्न रंग हमारे मनोवैज्ञानिक पक्ष को उजागर करते हैं। हर रंग का एक अलग संवेदनात्मक पहलू होता है। रंग हमारे जीवन में सर्वत्र रचे बसे है, चाहे वह पहनने के वस्त्र हो अथवा खाने पीने के पदार्थ हो, या हमारा घर तथा कार्य करने के स्थान का वातावरण हो। मनोवैज्ञानिकों ने इस दिषा में कई प्रयोग किए हैं तथा रंगों के विषय में तर्कसंगत स्पष्टीकरण भी दिये हैं–

रंगों का मनोवैज्ञानिक विष्लेषण

रंग	मनोवैज्ञानिक विष्लेषण
गहरा सुर्खलाल	मिलनसारिता व प्रेम का द्योतक, गहरी उत्तेजना, खतरा, आक्रोष एवं प्रभावषील भाव का प्रदर्षन।
मध्यम लाल	स्वास्थ्य एवं जीवन का संकेत देते हैं।
चमकीला लाल	इच्छा व आकांक्षाओं का परिचायक है।
गहरा गुलाबी	स्त्रीत्व का प्रतीक, स्त्रीगुणों एवं उत्सव संबंधी सूचक की सूचना देते हैं।
नरंगी	मनुष्य की उग्रता, उत्साह व संघर्ष को दर्षाता है।
पीला	ताजगी, स्फूर्ति, बौद्धिक व मानवीय संवेदना एवं उत्सवी आकर्षण दर्षाता है।
सुनहरा	धन, वैभव व सम्पन्नता का प्रतीक माना गया है
नीला	शीतलता एवं ठंडापन का आभास देते हैं।
हरा	प्रकृति का प्रमुख रंग है, प्रसन्नता, व्यवहारिकता, खुषहाली का संदेष देता है।
बैंगनी	राजसी वैभव व उत्सव संबंधी भव्यता को दर्षाते हैं।
सफेद	शांति, स्वच्छता, पवित्रता एवं अनंत आयाम का परिचय देता, श्वेत वस्त्र सादगी व त्याग दर्षाते, व्यक्तित्व को निखारते।
काला	निराशा व दुःख का भाव, उदासी दर्षाते हैं।

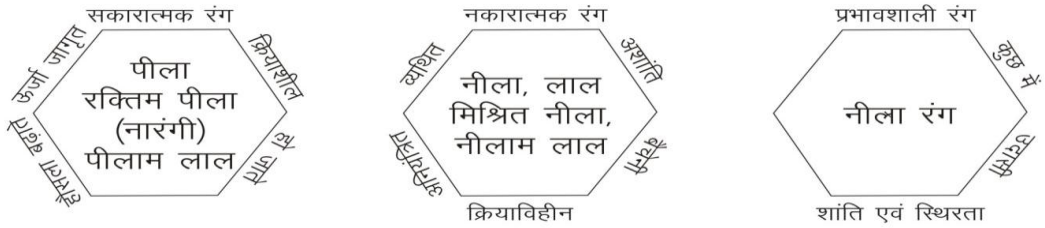

यहाँ व्यक्तिगत भिन्नता परिलक्षित होती है यह बिल्कुल भी आवष्यक नहीं एक रंग का दो व्यक्ति पर समान रूप से प्रभाव पड़े। प्रस्तुत शोध पत्र में मेरे अध्ययन का मुख्य केन्द्र बिन्दु रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव क्या पड़ता है इसकी विवेचना, विष्लेषण एवं निष्कर्ष की व्यख्या करना है

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

उद्देष्य :

शोध अध्ययन के मुख्य उद्देष्य निम्न है–

- रंगों का जीवन में सार्थक प्रभाव पड़ता है।
- किशोरियाँ रंगों की दुनिया से कितनी परिचित है।
- विभिन्न रंग उनके जीवन/मानसिकता पर क्या प्रभाव डालते हैं।
- किषोरियाँ रंगों के प्रति रूझान रखती है इस तथ्य को ज्ञान करना।

प्राकल्पना :

विभिन्न रंगों का किषोरियों पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है।
रंगों का जीवन में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

समग्र एवं निदर्षन :

शोध अध्ययन हेतु खंडवा शहर की विभिन्न स्कूल तथा महाविद्यालय में अध्ययनरत 100 किषोरियों का स्तरित निदर्षन के आधार पर चुनाव किया गया।

चर :

प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न चरों को नियंत्रित किया गया।
आयु समूह – 16–21
षिक्षा – हायर सेकेण्डरी एवं महाविद्यालयीन स्तर (स्नातक/स्नातकोत्तर)

अध्ययन पद्धति :

अध्ययन को साकार, यथार्थ एवं ठोस रूप प्रदान करने हेतु स्वनिर्मित प्रष्नावली, अवलोकन विधि, साक्षात्कार, सर्वेक्षण का उपयोग किया गया।

विष्लेषण :

अध्ययन सर्वेक्षण एवं साक्षात्कार के आधार पर तथ्यों के विष्लेषण से निम्न पक्ष उभरकर सामने आए – रंग हमारे जीवन का अभिन्न अंग के संबंध में 95 प्रतिषत ने हाँ और 5 प्रतिषत ने नहीं प्रतिक्रिया व्यक्त की।

प्राथमिक और द्वैतियक रंगों के ज्ञान के विषय में 80 प्रतिषत ने सकारात्मक 20 प्रतिषत ने नकारात्मक प्रत्युत्तर दिया। विभिन्न रंग के पसंद नापसंद के संदर्भ में 32 प्रतिषत को लाल रंग, 20 प्रतिषत को पीला रंग, 22 प्रतिषत को हरा रंग, 16 प्रतिषत को गुलाबी, 10 प्रतिषत को नीला रंग पसंद है।

किशोरियों से जब पूछा गया कि विभिन्न रंगों में कौन सा रंग उदासी का भाव उत्पन्न करता है। 63 प्रतिषत ने भूरा व मटमैला रंग, 27 प्रतिषत ने स्लेटी रंग, 10 प्रतिषत ने काले रंग के प्रति सहमति जाहिर की।

वस्त्रों में रंग चयन की प्रतिक्रिया स्वरूप स्फूर्ति और ऊर्जा प्रदान करने वाले रंगों के बारे में विषय में संबंध में 83 प्रतिषत ने कहा कि लाल, नारंगी, हरा, पीला रंग ऊर्जा एवं स्फूर्ति प्रदान करते हैं। 7 प्रतिषत ने कोई प्रतिक्रिया जाहिर नहीं की।
भोजन व खाद्य वस्तुओं में रंगों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में 89 प्रतिषत कहा कि रंग–बिरंगा भोजन स्वाद व भूख में वृद्धि करता है और 11 प्रतिषत ने कहा कोई विषेष प्रभाव नहीं पड़ता।

यह उल्लेखनीय है कि प्रत्येक किषोरी की मनोवृत्ति एवं अभिरूचि भिन्न भिन्न प्रकार जब उनसे जानना चाहा घर के रंग संयोजन में वे कैसे रंगों का पसंद करती है तो क्रमषः 85 प्रतिषत ने कहा हल्के रंग और 15 प्रतिषत ने कहा उन्हें गहरे रंग पसंद है। रंग न होते तो आप कैसा महसुस करते के संदर्भ में 22 प्रतिषत ने कहा जीवन अधूरा सा महसुस होता, 52 प्रतिषत ने कहा जीवन में उदासी एवं निराषा का अंबार होता 26 प्रतिषत ने प्रत्युत्तर दिया कि जीवन जीने का उत्साह फीका पड़ जाता। रंगों की मनोदषा एवं भावों पर प्रभाव पड़ता है इस पक्ष पर 93 प्रतिषत ने सकारात्मकता एवं 7 प्रतिषत ने नकारात्मक दर्षायी।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

निष्कर्ष :

अध्ययन के निष्कर्ष निम्न है –

- अध्ययन यह साबित करते हैकि रंग जीवन का अभिन्न अंग है।
- किषोरियाँ रंगों के विषय में ज्ञान रखती है।
- विभिन्न रंगों का उनके जीवन पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- घर में रंग संयोजन में रंगों के चुनाव के प्रति रूचि रखती है।
- उत्तरदात्रियों का मानना है कि भोजन में रंग स्वाद व भूख दोनों बढ़ाने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं और मानसिक पटल पर इसका प्रभाव अच्छा पड़ता है।
- मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किषोरियों में व्यक्तिगत भिन्नता देखी गई यह बिल्कुल भी आवष्यक नहीं है कोई एक विषेष रंग का प्रभाव सभी पर एक जैसा पड़ता हो।
- रंगों के बिना जीवन अधूरा, निराषा व उदासी से भरा तथा जीवन जीवने के उत्साह में कमी होगी।
- अधिकांष किषोरियों की मनोदषा/भावों पर रंगों का गहरा प्रभाव पड़ता है।
- किषोरियों से साक्षात्कार के दौरान यह पक्ष स्पष्ट हुआ कि अधिकांष किषोरियों को चटकीले व भड़कीले रंग पसंद नहीं है।
- कुछ किषोरियों ने मत व्यक्त किया कि सभी रंग सभी पर फबते नहीं है इसलिए व्यक्तित्व के अनुरूप वस्त्रों में रंगों का चयन करना चाहिए।
- अध्ययन के माध्यम से उपकल्पना सार्थक सिद्ध हो रही है कि रंगों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार का प्रभाव पड़ता है।

सुझाव :

रंगों के विषय में गूढ़ एवं शोधपरक जानकारी देने के लिए समय–समय पर व्याख्यान एवं प्रदर्षनी का आयोजन किया जा सकता है।

कुछ लोग जो जीवन के प्रति उदासीन होते हैं, उन्हें रंगों के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव की जानकारी देकर जीवन में उत्साह, उमंग व ऊर्जा की वृद्धि की जा सकती है।

रंगों की दुनिया में हो रहे नित नये शोध एवं विभिन्न क्षेत्र जैसे– चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, विज्ञान, आतंरिक सज्जा में रंगों का प्रभाव व महत्व से संबंधित विषयों पर लेखो का स्कूल व महाविद्यालय स्तर पर प्रकाषित पत्र पत्रिकाओं में उल्लेख किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1 *डॉ. ललिता शर्मा – आंतरिक गृह सज्जा एवं वास्तुकला, 2000, स्टार पब्लिकेषन्स, आगरा*
2 *डॉ. शषीप्रभा जैन, डॉ. अर्चना जैन – अपेरल डिजाईन, 2011, षिवा प्रकाषन, इन्दौर*
3 *डॉ. वृन्दा सिंह – वस्त्र विज्ञान एवं परिधान, 2005, पंचषील प्रकाषन, जयपुर*